हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

वैश्विक ज्ञान के लिए स्वदेशी विचारों को शामिल करना जरूरी : सुचेता

रांची, विशेष संवाददाता। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची ने एमिटी विश्वविद्यालय के सहयोग से उपनिवेशवाद से मुक्तिः शोध पद्धति विषय पर मंगलवार को व्याख्यान हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्वानों, विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को एक मंच प्रदान करना था, जहां ज्ञान निर्माण के लिए नए दृष्टिकोणों पर चर्चा की जा सके।

वक्ता सीयूजे के जनजातीय अध्ययन विभाग की प्रोफेसर डॉ सुचेता सेन चौधरी ने कहा कि वैश्विक ज्ञान निर्माण में स्वदेशी और हाशिए पर पड़े दृष्टिकोणों को समावेशित करना जरूरी है। प्रो सुचेता ने अपने व्याख्यान में मानवविज्ञानी इरावती कर्वे का उल्लेख करते हुए बताया कि 1927 में इरावती कर्वे ने जर्मनी के बर्लिन में मानवविज्ञान और यूजेनिक्स के क्षेत्र में प्रतिष्ठित प्रोफेसर फिशर के मार्गदर्शन में अध्ययन किया। प्रोफेसर फिशर ने इरावती को यह साबित करने का काम सौंपा कि श्वेत यूरोपीय लोग अन्य नस्लों से अधिक समझदार और तर्कसंगत हैं। यह सिद्धांत खोपड़ियों के अध्ययन पर आधारित था, जिसमें यह दावा किया गया था कि श्वेत व्यक्तियों की खोपड़ी की संरचना, विशेष रूप से असममितता, उनकी बुद्धिमत्ता का प्रतीक है।

कार्यक्रम में मंगलवार को बोलतीं डॉ सुचेता सेन चौधरी।

निष्पक्ष दृष्टिकोण पर जोर

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का उद्देश्य शोधकर्ताओं को औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त होकर निष्पक्ष और समावेशी शोध दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करना है।